उल्टी-सुल्टी
अम्मा
الٹی سلٹی امّاں
कमला भसीन
کملا بھسین

लेखनः कमला भसीन
चित्र व डिज़ाइनः प्रिया कुरिअन

पहला संस्करणः 2008
द्वितीय संस्करणः 2013

जागोरी
बी–114, शिवालिक,
मालवीय नगर,
नई दिल्ली–110017
फोनः 26691219, 26691220
फ़ैक्सः 26691221
हेल्पलाइनः 26692700
ई–मेलः jagori@jagori.org
वेबसाइटः www.jagori.org

मुद्रण : सिगनेट जी प्रेस
फ़ोनः 26815094

مصنّف: کملا بھسین
تصویریں و ڈیزائن: پریا کورین

پہلا ایڈیشن: 2008

جاگوری
بی-114، شوالِک، مالویہ نگر، نئی دہلی- 110017
فون: 26691219، 26691220
فیکس: 26691221
ہیلپ لائن: 26692700
ئی میل: jagori@jagori.org
ویب سائٹ: www.jagori.org

उल्टी-सुल्टी अम्मा

الٹی سلٹی امّاں

कमला भसीन

کملا بھسین

भूमिका

करीब बीस साल पहले, जब मेरी बेटी मीतो सात-आठ साल की थी मैंने एक लम्बी कविता लिखी। उसका शीर्षक था "उल्टी सुल्टी मीतो"। उस कविता में मैंने अपनी बेटी के दो अलग-अलग रूप दिखाये थे। एक सुल्टा और एक उल्टा। एक रूप में मीतो एकदम नेक, कहना मानने वाली, सब कुछ "अच्छी बच्ची" के जैसे करने वाली। दूसरे रूप में मीतो है शैतान, नाराज, गुस्सा और सब कुछ उल्टा-पुल्टा करने वाली। दोनों रूपों में मीतो मुझे अच्छी लगी। उसके दोनों रूपों को मैंने अपनाया। दोनों का मज़ा लिया। अगर बच्चे शैतान न हों, मनमौजी न हों, अगर वे उल्टा-पुल्टा न करें तो क्या उन्हें हम बच्चे कह सकते हैं? बचपन का मतलब ही होता है उल्टा-सुल्टा होना।

यह लम्बी कविता एक छोटी खूबसूरत सी किताब के रूप में आई। ख़ासतौर से लड़कियों को बहुत अच्छी लगी। इस किताब को लिखने के बाद मैं सोचने लगी क्या सिर्फ़ बच्चे ही उल्टे-सुल्टे होते हैं। क्या माँ-बाप या बुजुर्ग हमेशा सुल्टे, अच्छे, नेक होते हैं? क्या माँ-बाप गड़बड़ नहीं करते? शैतानी नहीं करते? क्या माँएं भी "उल्टी," शैतान होती हैं? या हो सकती हैं?

आमतौर पर लोगों का मानना है कि माँएं हमेशा भली, अच्छी और नेक होती हैं। वे सब कुछ जानती हैं और हमेशा वही करती हैं जो उन्हें करना चाहिए। अगर वे ऐसी नहीं हैं तो वे अच्छी अम्मा नहीं हैं।

सिर्फ़ माँओं से ही नहीं, हर औरत से हमारा समाज यही उम्मीद रखता है कि वे हमेशा नेक और अच्छी हों। ऐसी तस्वीरों और उम्मीदों का नतीजा होता है औरतों से मस्ती, शैतानी और ग़ल्ती करने का अधिकार छीन लेना, उनके अन्दर छुपी बच्ची को ख़त्म कर देना। औरत होना और फिर माँ होना ऐसा है "जैसे रसगुल्ला और गन्ने चढ़ा"। (करेला और नीम चढ़ा का उल्टा) एकदम मीठी और एकदम बोरिंग।

कुछ माँएं भी यही समझती हैं कि वे हमेशा भली, ठीक और सत्यवान होती हैं। वे हमेशा बच्चों से ज़्यादा जानती हैं, बच्चों से ज़्यादा क़ाबिल और नेक होती हैं। न जाने क्यों हम ये भूल जाते हैं कि औरतें और माँएं भी इन्सान हैं। उनमें गुण-अवगुण, अच्छाइयां-बुराइयां दोनों होती हैं। सच तो यह है कि लड़कियाँ और युवतियाँ एकदम से, बिना किसी ख़ास तैयारी के माँ बन जाती हैं। हम यह भी भूल जाते हैं कि माँ भी तभी पैदा होती हैं या बनती है जब उसका पहला बच्चा पैदा होता है। यानि मीतो के पैदा होने से पहले मैं औरत थी, माँ नहीं थी। माँ मुझे मेरी बेटी ने बनाया। माँ बनने से मेरा बचपन ख़त्म नहीं हुआ, वह और उभरा। मैं बच्चों के संग बच्ची बनने लगी। फिर से मस्ती करने लगी, तुतलाने लगी।

अपनी ज़िन्दगी में मैंने बहुत सारी अम्मायें देखीं और परखी हैं। मेरा मानना है कि माँए भी "उल्टी-सुल्टी" हो सकती हैं, और होती हैं। सच पूछो तो मुझे बहुत खुशी है कि माँएं भी हमेशा नेक, अच्छी, सुल्टी, सुलझी, सुलक्षणी नहीं होतीं। अगर ऐसी हों माँएं तो बड़ी "बोरिंग" हो जायें। अगर माँओं में बचपन न हो तो बच्चों का बचपन भी न पनप पाये। बिन बचपन की माँएं तो हमेशा भाषण ही देती रहें, डाँटती ही रहें और बच्चों की हँसी, मस्ती छीनती रहें।

उल्टी-सुल्टी अम्मा में जो माँ है उसके दो रूप हैं। एक सुल्टा और एक उल्टा। ये अम्मा एक इन्सान है, देवी नहीं है। इस अम्मा के अन्दर भी एक बच्ची छुपी है, जो मस्ती करती है गड़बड़ करती है, ग़ल्ती करती है। यह अम्मा "सर्व गुण सम्पन्न" या 'सब गुणों से भरी' नहीं है। इस अम्मा को भी शैतानी करने में मज़ा आता है। वह बेईमानी भी कर लेती है और ग़ल्ती भी।

मुझे याद हैं मेरी अपनी माँ की शैतानियाँ। होली पर सब से ज़्यादा गड़बड़ मेरी माताजी करती थीं। वे सफ़ेद साबुन को बर्फ़ी के जैसे काट कर उस पर चाँदी का वर्क़ लगा देती थीं। छोटी इलायची के अन्दर काली मिर्च भर देती थी। जब होली खेलने के बाद बड़े प्यार से महमानों को वे साबुन की बर्फ़ी और कड़वी इलायची पेश करतीं तो बेचारे मेहमान थू-थू करते रह जाते।

मैं भी दो बच्चों की माँ हूँ। मेरी बेटी (मीतो) बड़ी है, बेटा छोटा है। मैं गाँवों के स्कूलों में पढ़ी और कुछ ज़्यादा नहीं सीख पाई। मीतो अच्छे स्कूलों में पढ़ी और जल्दी ही कई विषयों में मुझ से ज़्यादा जानने लगी। उसने भरतनाट्यम सीखा जो मैं बिल्कुल नहीं जानती थी। यानि छोटी सी मीतो, कई विषयों में मुझसे ज़्यादा जानती थी और मेरी गुरु थी। उसे गुरु मानने में और उससे सीखने में मुझे गर्व ही महसूस होता था, कभी बुरा नहीं लगा। मुझे लगता है कि अगर हम बच्चों और बुज़ुर्गों, दोनों के उल्टे और सुल्टे दोनों रूपों को पहचानें और स्वीकारें तो परिवारों में ज़्यादा मज़ा और खुशियाँ आ सकती हैं। ज़्यादा बराबरी, लेन-देन, सीखने-सिखाने का माहौल बन सकता है।

इस किताब की अम्मा को बुजुर्गीयत का बोझ नहीं ढोना पड़ रहा। वह एकदम बिन्दास है।

यह किताब अम्माओं के बचपन, शैतानी और आज़ादी के नाम है। और यह किताब माँओं और बेटियों की दोस्ती के नाम है। उल्टी-सुल्टी बेटियाँ बनेंगी उल्टी-सुल्टी माँएं और बनायेंगी खुशनुमा परिवार और समाज।

- कमला भसीन
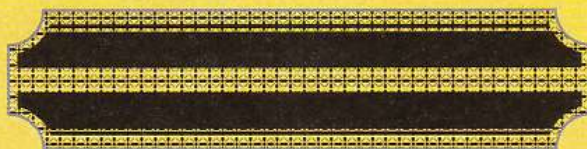
آؤ امّا کی بات سناؤں
انکے انیک روپ دکھاؤں
مائیں بھی ہوتی ہیں نٹکھٹ
آج یہ سبکو بتلاؤں

आओ अम्मा की बात सुनाएं
उनके अनेकों रूप दिखाएं
मांयें भी होती हैं नटखट
आज ये सबको बतलाएं
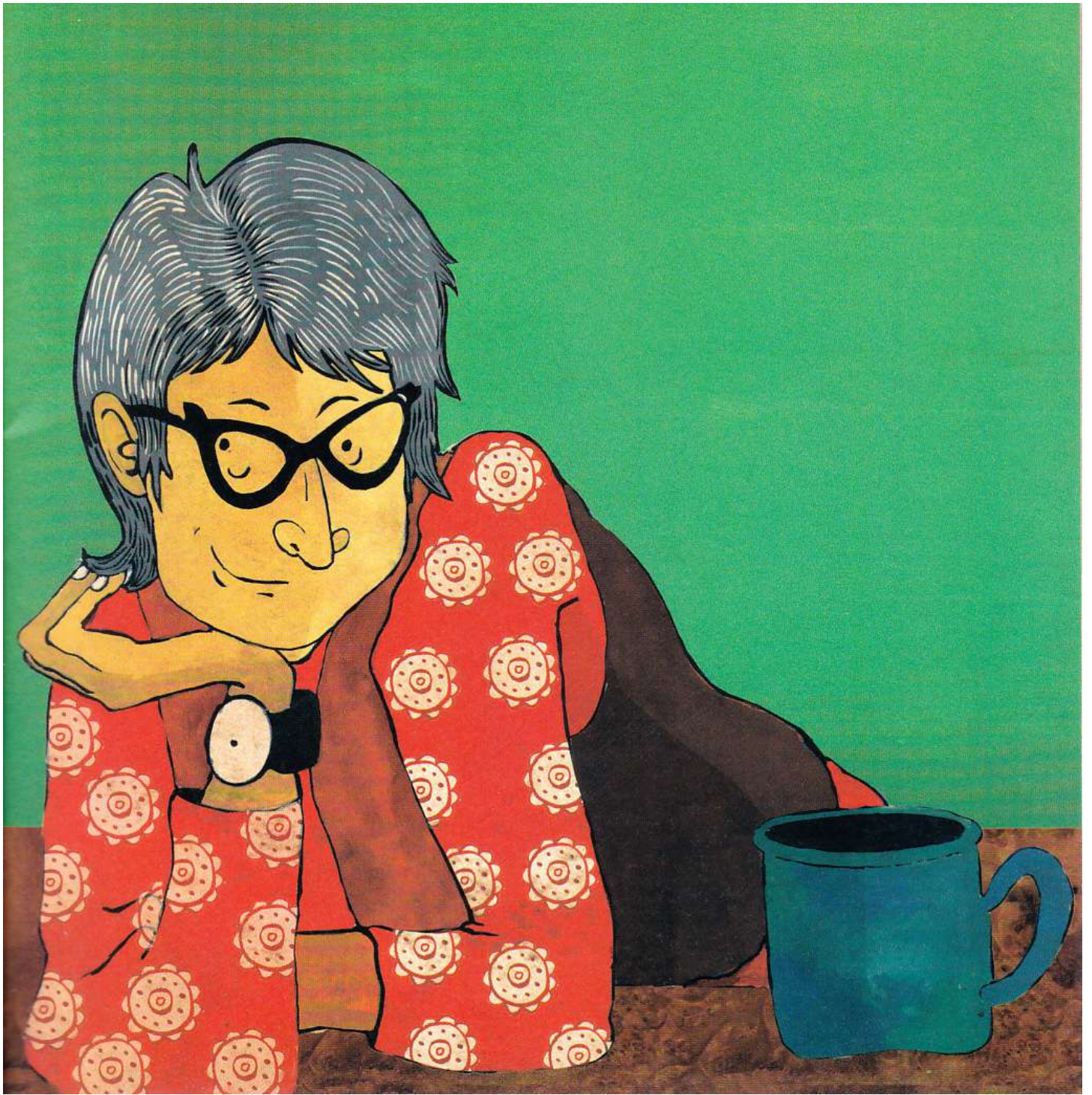
ہمیں کہیں کہ سب کچھ کھاؤ
سبزی دیکھ نہ منھ بچکاؤ
پر خود وہ کبھی نہ کدّو کھاتیں
آنکھ بچا پالک سرکاتیں

हमें कहें कि सब कुछ खाओ
सब्ज़ी देख ना मुंह बिचकाओ
पर खुद वो कभी न कद्दू खातीं
आंख बचा पालक सरकातीं
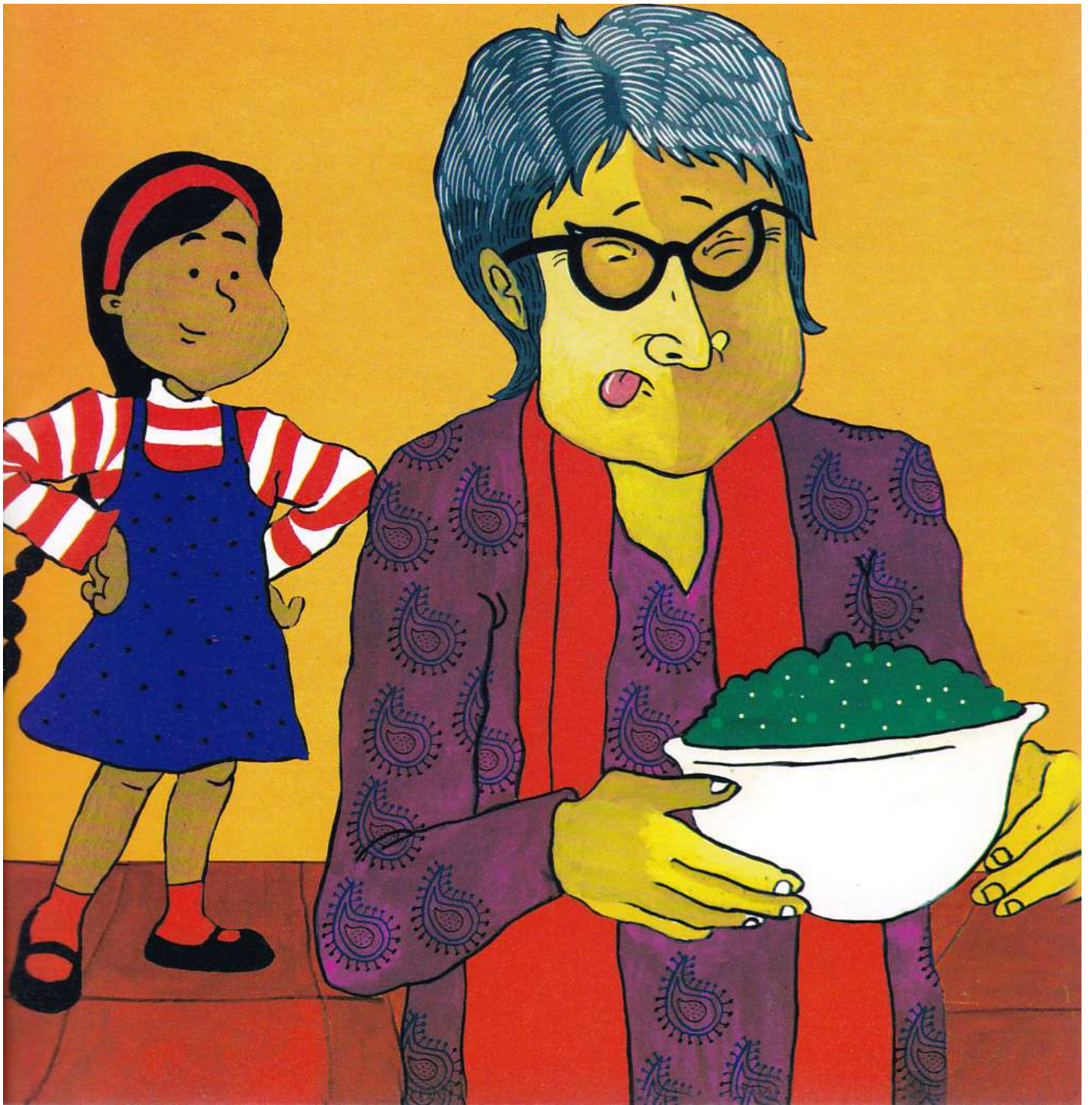
صفائی کی صفتیں ہمیں سناتیں
سردی میں بھی غُسل کراتیں
پر خود وہ پانی سے کتراتیں
سوکھا اسنان کر باہر آتیں
सफ़ाई की सिफ़्तें हमें सुनातीं
सर्दी में भी ग़ुसल करातीं
पर ख़ुद वो पानी से कतरातीं
सूखा स्नान कर बाहर आतीं
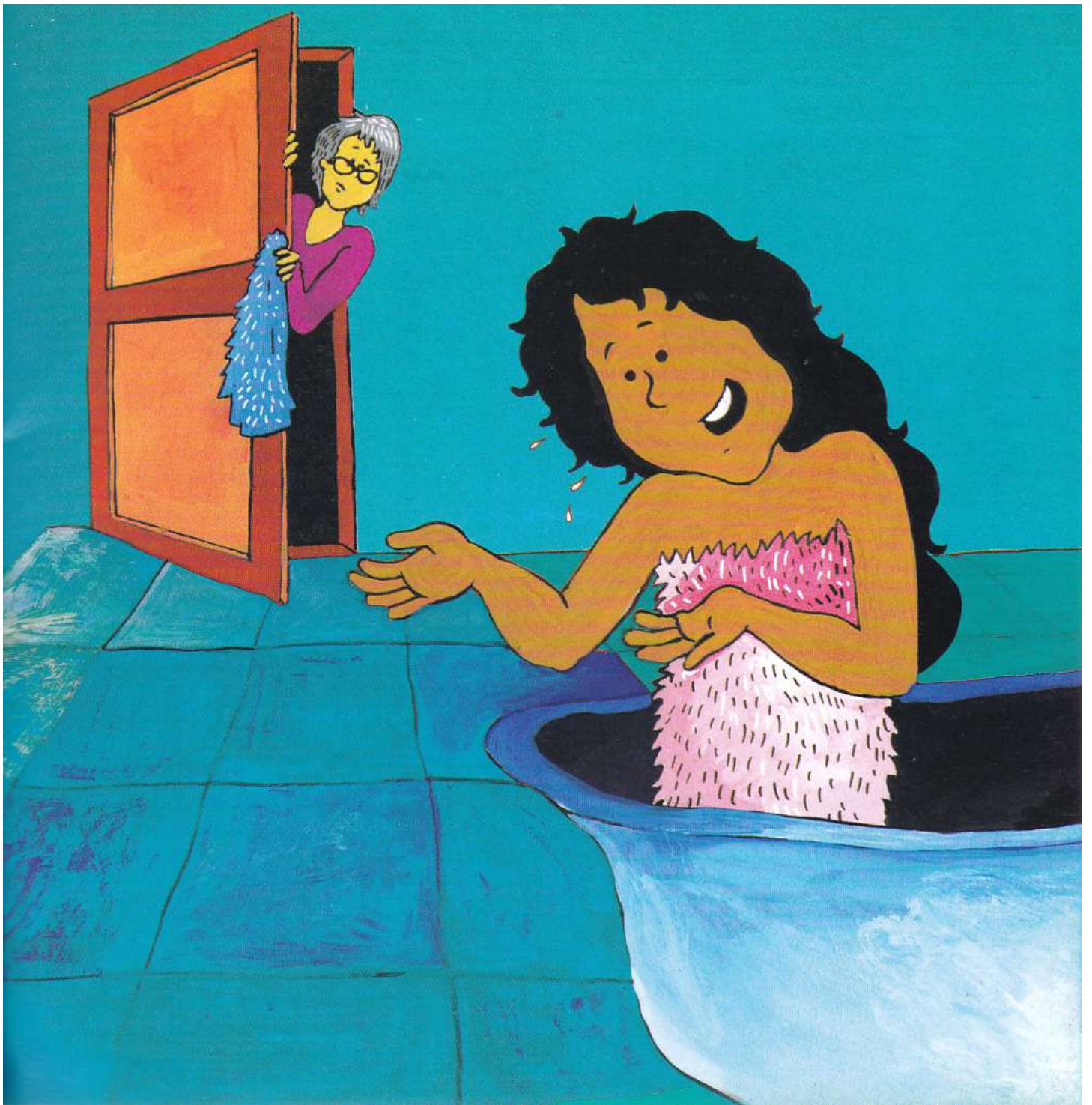
اطمینان سے کبھی پڑھاتیں
الجھی باتوں کو سلجھاتیں
پر کبھی نہ غلطی ایک سہاتی
لگا ڈانٹ وہ مجھے رُلاتیں

इत्मीनान से कभी पढ़ातीं
उलझी बातों को सुलझातीं
पर कभी न ग़लती एक सुहाती
लगा डांट वो मुझे रुलातीं
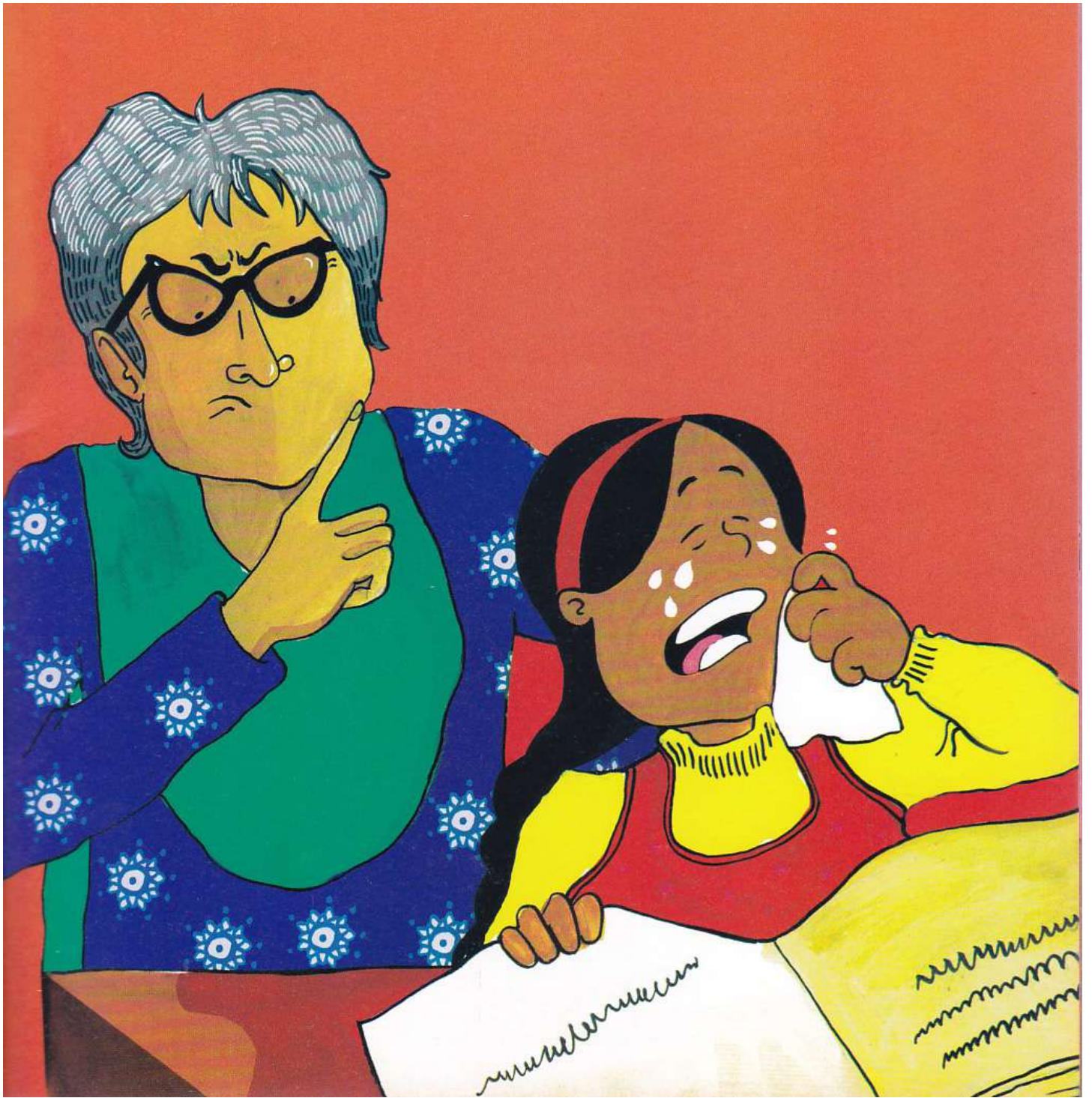
کہیں ہمیں دھیرج سے کھاؤ
کھا کھا کر نہ پیٹ پھلاؤ
پر ہم رہ جائیں ہکے بکے
جب وہ کھائیں دس دس مکّے

कहें हमें धीरज से खाओ
खा खा के ना पेट फुलाओ
पर हम रह जाएं हक्के-बक्के
जब वो खायें दस-दस मक्के
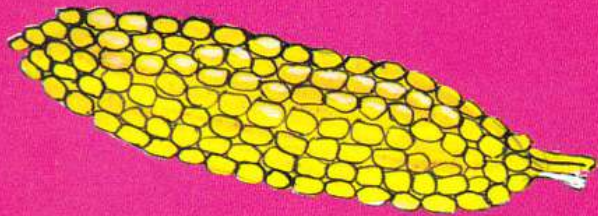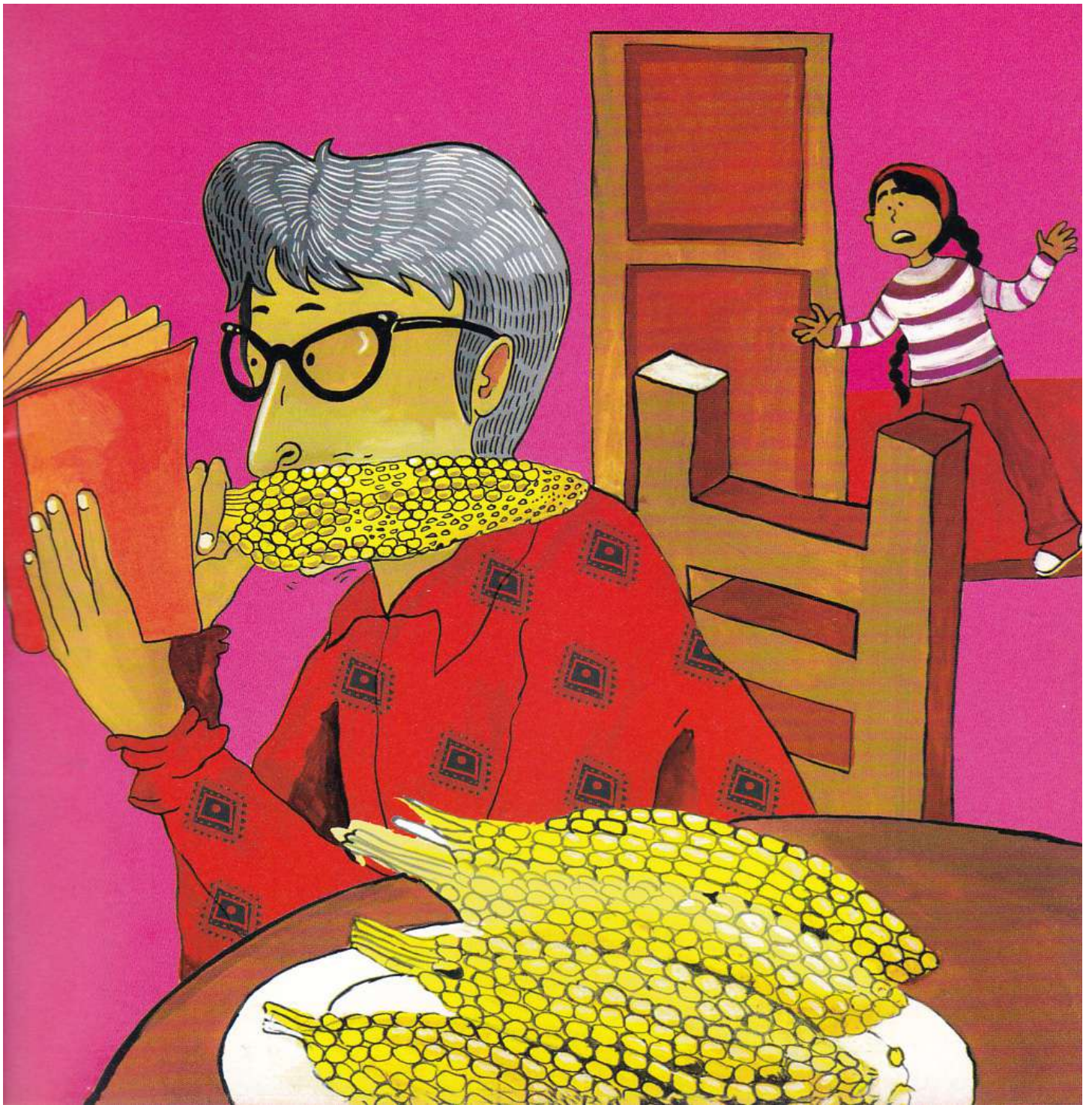
کبھی وہ ہمسے خوب ہی کھیلیں
پالی دے دیں پالی لے لیں
پر جب وہ بے ایمانی پر آئیں
آنکھ دکھا بازی لے جائیں

कभी वो हमसे ख़ूब ही खेलें
पाली दे-दें पाली ले-लें
पर जब वो बेईमानी पर आयें
आंख दिखा बाज़ी ले जायें
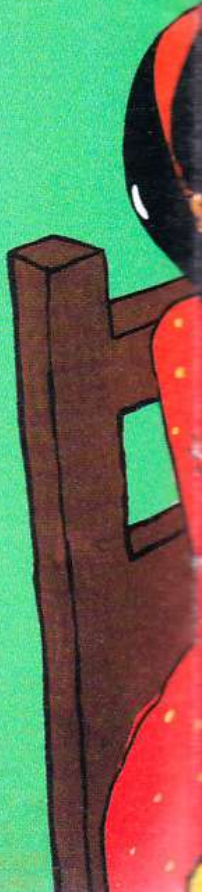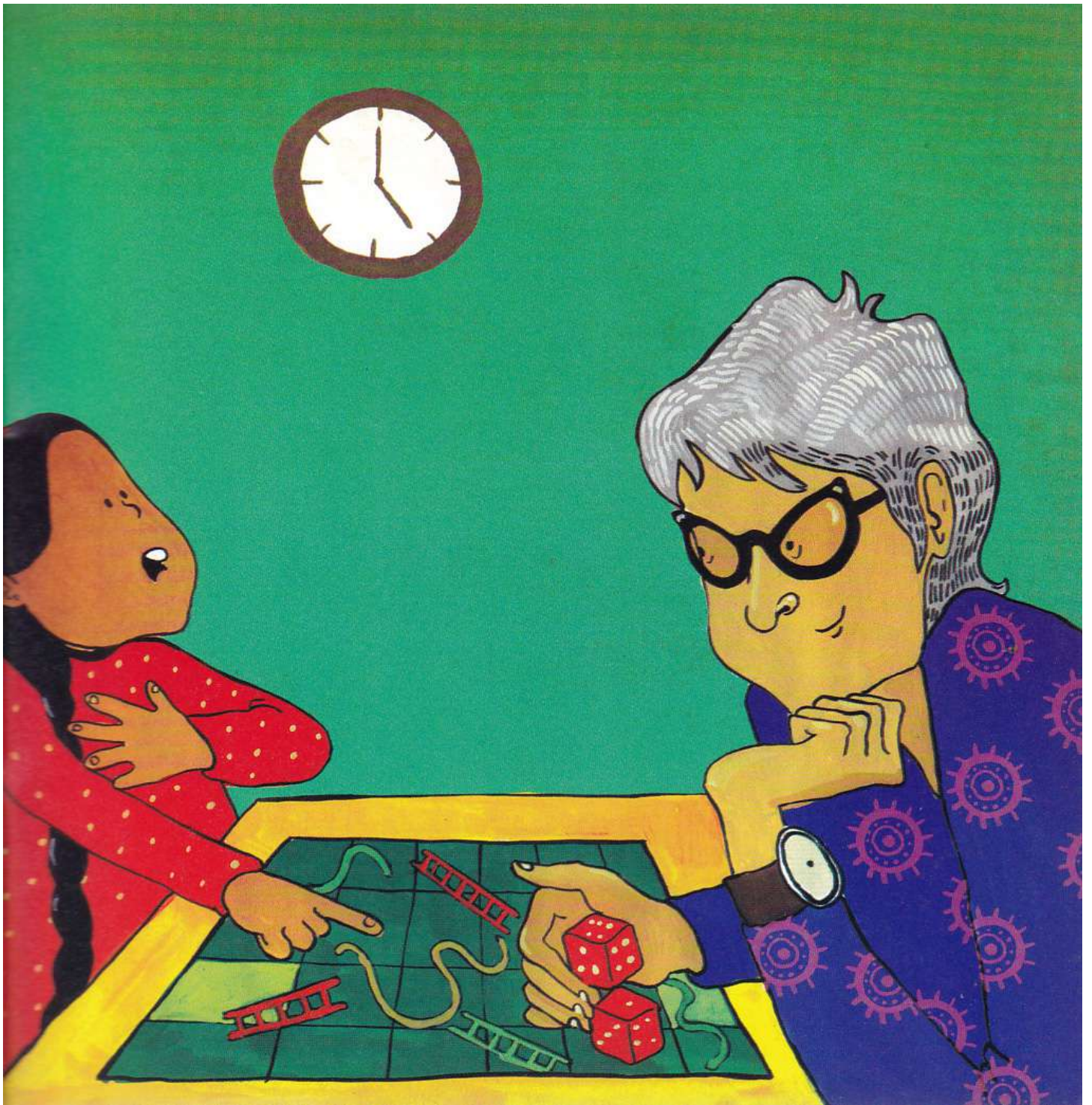
کبھی وہ ایسا پیار جتائیں
بیٹا، رانی، کرتی جائیں
پر کبھی زور سے وے غرّائیں
کھڑے کھڑے ہم سب تھرّائیں
कभी वो ऐसा प्यार जतायें
बेटा, रानी, करती जायें
पर कभी ज़ोर से वे गुर्रायें
खड़े-खड़े हम सब थर्रायें

پڑھنے لگوں تو کتاب ہلاتیں
کر گدگدی مجھے ستاتیں
تنگ آ کر گر روٹھ میں جاتی
ہاتھ جوڑ کر مجھے مناتیں

पढ़ने लगूं तो किताब हिलातीं
कर गुदगुदी मुझे सतातीं
तंग आ कर गर रूठ मैं जाती
हाथ जोड़ कर मुझे मनातीं
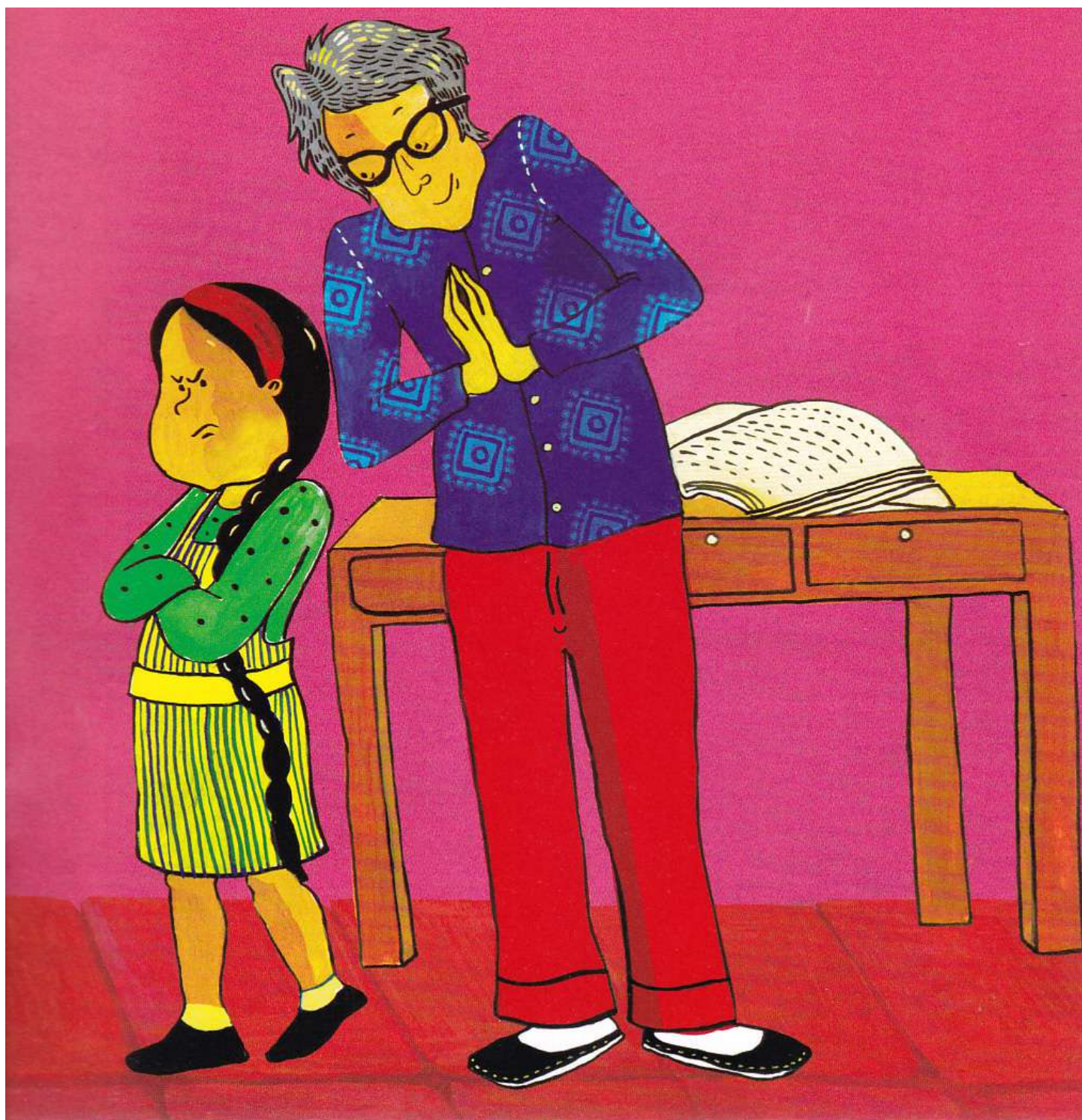
یوں تو عمدہ گیت بناتیں
سکھیوں سنگ زوروں سے گاتیں
پر کبھی وہ ایسے گیت بنائیں
بال سفید انکے شرمائیں

यूं तो उम्दा गीत बनातीं
सखियों संग जोरों से गातीं
पर कभी वो ऐसे गीत बनायें
बाल सफ़ेद उनके शरमायें

کبھی وہ ڈھنگ سے کپڑے پہنیں
ہمیں نہ سُننے پڑیں اُلاہنے
پر کبھی وہ ایسے روپ بنائیں
ہم سب دیکھیں دائیں بائیں

कभी वो ढंग से कपड़े पहने
हमें न सुनने पड़ें उलाहने
पर कभी वो ऐसा रूप बनायें
हम सब देखें दायें-बायें

کیلیں ٹھوکیں فیوز لگا لیں
سائکل اپنی خوب بھگا لیں
دنیا بھر کا کام ہے آتا
پر کھانا بنانا انھیں نہ بھاتا

कीलें ठोकें, फ़्यूज़ लगा लें
साइकिल अपनी खूब भगा लें
दुनिया भर का काम है आता
पर खाना बनाना उन्हें न भाता
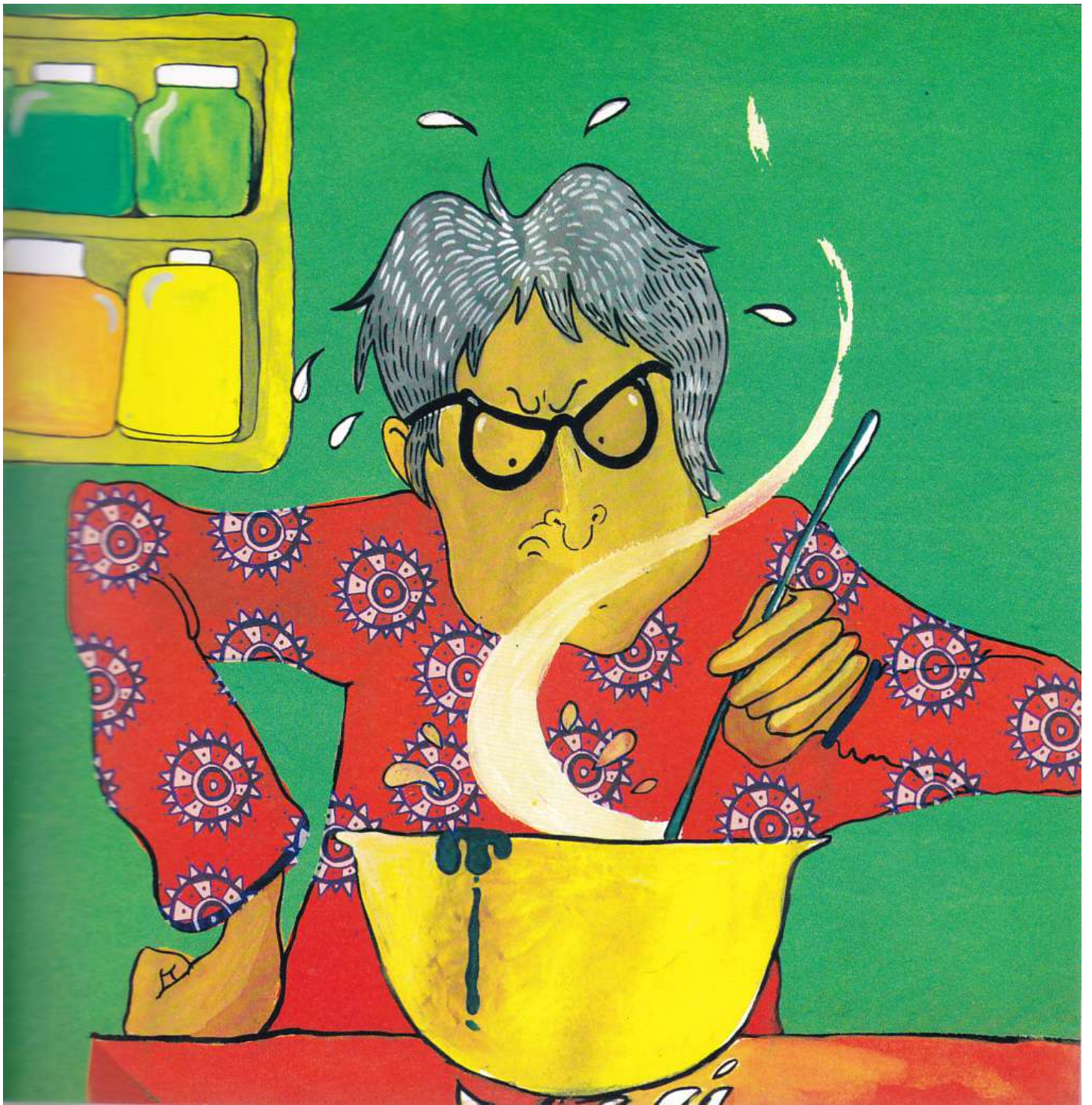
کھیلوں میں وہ مجھ سے آگے
دوڑ میں بھی وہ آگے بھاگیں
پر ناچ نہ وہ مجھ سا کر پاتیں
یوگا میں بھی مات وہ کھاتیں

खेलों में वो मुझ से आगे
दौड़ में भी वो आगे भागें
पर नाच न वो मुझ सा कर पातीं
योगा में भी मात वो खातीं

سُر میں گانا انھیں نہ آئے
پر بن گائے وہ رہ نہ پائیں
ناچ کے معنے وہ نہ جانیں
پر بن ناچے بھی وہ نہ مانیں

सुर में गाना उन्हें न आये
पर बिन गाये वो रह न पाये
नाच के मायने वो न जाने
पर बिन नाचे भी वो न माने
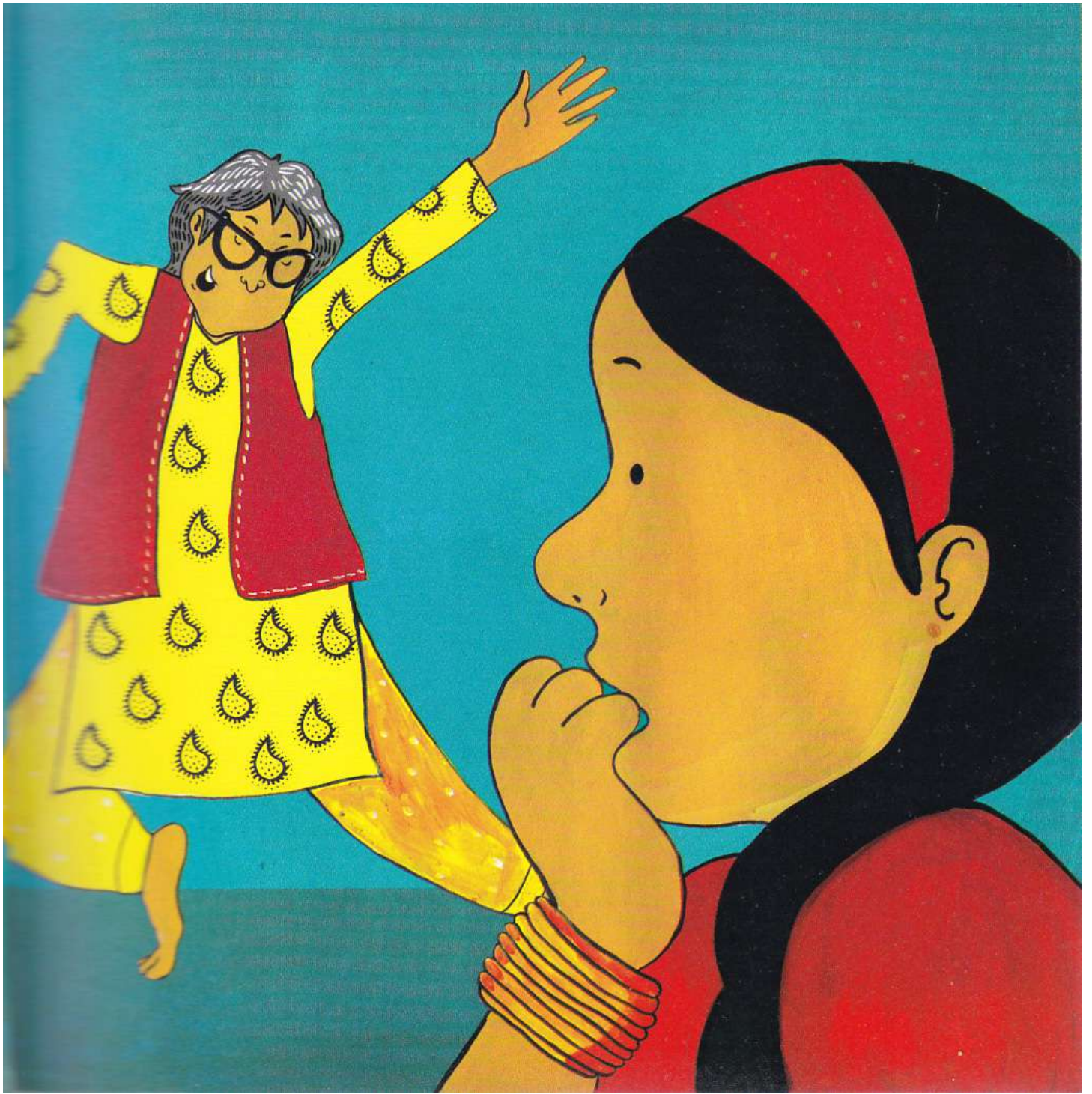
دوست ہمارے جب بھی آتے
ہم خاموشی کا آرڈر پاتے
پر انکی سکھیاں جب آ جاتیں
آسمان کو سر پر اٹھاتیں

दोस्त हमारे जब भी आते
हम ख़ामोशी का ऑर्डर पाते
पर उनकी सखियां जब आ जातीं
आसमान को सिर पर उठातीं
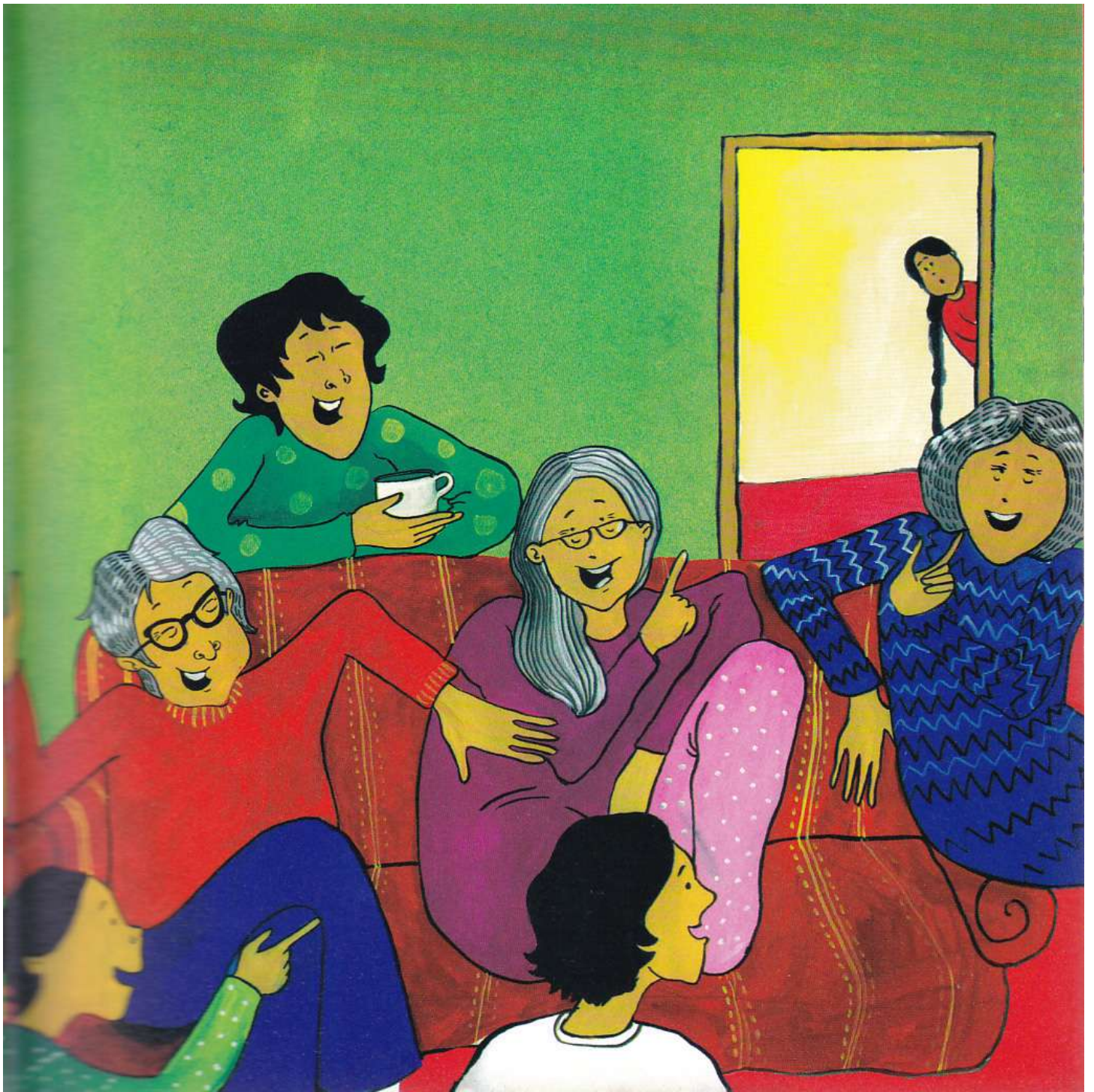
ناک امّا کی ماشا اللہ
طرح طرح کا کرے وہ ہلّا
کبھی سانپ سی پھنکاری مارے
کبھی گرجے جیسے بادل کارے
پریشان ماں کہتی سچّی
ایسی ناک سے میں نکٹی اچھّی

नाक अम्मा की माशा अल्लाह
तरह-तरह का करे वो हल्ला
कभी सांप सी फुंकारी मारे
कभी गरजे जैसे बादल कारे
परेशान मां कहती सच्ची
ऐसी नाक से मैं नकटी अच्छी

جب انکو ہے نیند ستاتی
مجھ سے بھی پہلے سو جاتیں
پر کبھی کبھی بستر کے اندر
وہ بھی بن جاتی ہیں بندر
خوب مچاتیں دھما چوکڑی
پیر ہوں اوپر نیچے کھوپڑی

जब उनको है नींद सताती
मुझसे भी पहले सो जातीं
पर कभी-कभी बिस्तर के अंदर
वो भी बन जाती हैं बंदर
खूब मचातीं धमा-चौकड़ी
पैर हों ऊपर नीचे खोपड़ी

پر آخر میں میں چاہوں کہنا
میری ماں سی اور کوئی نہ
ماں وہ ہیں پر بزرگ نہیں ہیں
عمر بڑی پر دوست بنی ہیں
سب سے انکا کام یہ اچھّا
بن جاتیں بچّوں میں بچّا

पर आख़िर में मैं चाहूं कहना
मेरी मां सी और कोई ना
मां वो हैं पर बुज़ुर्ग नहीं हैं
उमर बड़ी पर दोस्त बनी हैं
सबसे उनका काम ये अच्छा
बन जातीं बच्चों में बच्चा

میں بھی دو بچّوں کی ماں ہوں۔ میری بیٹی ''میتو'' بڑی ہے، بیٹا چھوٹا ہے۔ میں گاؤں کے اسکولوں میں پڑھی اور کچھ زیادہ نہیں سیکھ پائی۔ میتو اچھے اسکولوں میں پڑھی اور جلدی ہی کئی وشیوں میں مجھ سے زیادہ جاننے لگی۔ اس نے بھرت ناٹیم سیکھا جو میں بالکل نہیں جانتی تھی۔ یعنی چھوٹی سی میتو کئی وشیوں میں مجھ سے زیادہ جانتی تھیں اور میری گُرو تھی۔ اسے گُرو ماننے میں اور اس سے سیکھنے میں مجھے گرو ہی محسوس ہوتا تھا، کبھی بُرا نہیں لگا۔ مجھے لگتا ہے کہ اگر ہم بچّوں اور بزرگوں دونوں کے اُلٹے اور سُلٹے دونوں روپوں کو پہچانیں اور سویکاریں تو پریواروں میں زیادہ مزہ اور خوشیاں آ سکتی ہیں۔ زیادہ برابری، لین دین، سیکھنے سکھانے کا ماحول بن سکتا ہے۔

اس کتاب کی امّاں کو بزرگیت کا بوجھ نہیں ڈھونا پڑ رہا۔ وہ ایک دم بنداس ہے۔ یہ کتاب امّاؤں کے بچپن، شیطانی اور آزادی کے نام ہے۔ اور یہ کتاب ماؤں اور بیٹیوں کی دوستی کے نام ہے۔ اُلٹی سُلٹی بیٹیاں بنیں گی الٹی سلٹی مائیں اور بنائیں گی خوشنما پریوار، اور سماج۔

کملا بھسین

اب پڑھنے کتاب آپ پیچھے جائیں
جہاں ہندی -اردو دونوں پائیں

اپنی زندگی میں میں نے بہت ساری امّائیں دیکھی اور پرکھی ہیں۔ میرا ماننا ہے کہ مائیں بھی ''الٹی سلٹی'' ہو سکتی ہیں، اور ہوتی ہیں۔ سچ پوچھو تو مجھے بہت خوشی ہے کہ مائیں بھی ہمیشہ نیک، اچھی، سلٹی، سلجھی، سُلکشنی نہیں ہوتیں۔ اگر ایسی ہوں مائیں تو بڑی ''بورنگ'' ہو جائیں۔ اگر ماؤں میں بچپن نہ ہو تو بچّوں کا بچپن بھی نہ پنپ پائے۔ بن بچپن کی مائیں تو ہمیشہ بھاشن ہی دیتی رہیں، ڈانٹتی ہی رہیں اور بچّوں کی ہنسی، مستی چھینتی رہیں۔

الٹی سلٹی امّاں میں جو ماں ہے اسکے دو روپ ہیں۔ ایک سلٹا اور ایک الٹا۔ یہ امّاں ایک انسان ہے، دیوی نہیں ہے۔ اس امّاں کے اندر بھی ایک بچّی چھپی ہے، جو مستی کرتی ہے گڑبڑ کرتی ہے، غلطی کرتی ہے۔ یہ امّاں ''سرو گُن سمپن'' یا سب گُنوں سے بھری نہیں ہے۔ اس امّاں کو بھی شیطانی کرنے میں مزہ آتا ہے۔ وہ بے ایمانی بھی کر لیتی ہے اور غلطی بھی۔

مجھے یاد ہے میری اپنی ماں کی شیطانیاں۔ ہولی پر سب سے زیادہ گڑبڑ میری ماتا جی کرتی تھیں۔ وے سفید صابن کو برفی کے جیسا کاٹ کر اس پر چاندی کا ورق لگا دیتی تھیں۔ چھوٹی الائچی کے اندر کالی مرچ بھر دیتی تھیں۔ جب ہولی کھیلنے کے بعد بڑے پیار سے مہمانوں کو وے صابن کی برفی اور کڑوی الائچی پیش کرتیں تو بے چارے مہمان تھو تھو کرتے رہ جاتے۔

عام طور پر لوگوں کا ماننا ہے کہ مائیں ہمیشہ بھلی اور اچھی ہوتی ہے۔ وے سب کچھ جانتی ہیں اور ہمیشہ وہی کرتی ہیں جو انہیں کرنا چاہیے۔ اگر وے ایسی نہیں ہیں تو وے اچھی امّاں نہیں ہیں۔ صرف ماؤں سے ہی نہیں ہر عورت سے ہمارا سماج یہی امید رکھتا ہے کی وے ہمیشہ نیک اور اچھی ہوں۔ ایسی تصویروں اور امیدوں کا نتیجہ ہوتا ہے عورتوں سے مستی، شیطانی اور غلطی کرنے کا ادھیکار چھین لینا، ان کے اندر چھپی بچّی کو ختم کر دینا۔ عورت ہونا اور پھر ماں ہونا ایسا ہے ''جیسے رَسگُلّا اور گنّے چڑھا''۔ (کریلا اور نیم چڑھا کا الٹا) ایک دم میٹھی اور ایک دم بورنگ۔

کچھ مائیں بھی یہی سمجھتی ہیں کہ وے ہمیشہ بھلی، ٹھیک اور ستیہ وان ہوتی ہیں۔ وے ہمیشہ بچّوں سے زیادہ جانتی ہیں، بچّوں سے زیادہ قابل اور نیک ہوتی ہیں۔ نہ جانے کیوں ہم یہ بھول جاتے ہیں کہ عورتیں اور مائیں بھی انسان ہیں۔ ان میں گُن اوگُن، اچھائیاں برائیاں دونوں ہوتی ہیں۔ سچ تو یہ ہے کہ لڑکیاں اور یُوتیاں ایک دم سے، بنا کسی خاص تیّاری کے ماں بن جاتی ہیں۔ ہم یہ بھی بھول جاتے ہیں کہ ماں بھی تب ہی پیدا ہوتی ہے یا بنتی ہے جب اس کا پہلا بچّہ پیدا ہوتا ہے۔ یعنی میتو کے پیدا ہونے سے پہلے میں عورت تھی، ماں نہیں تھی۔ ماں مجھے میری بیٹی نے بنایا۔ ماں بننے سے میرا بچپن ختم نہیں ہوا، وہ اور ابھرا۔ میں بچوں کے سنگ بچّی بننے لگی۔ پھر سے مستی کرنے لگی، تُتلانے لگی۔

بھومیکا

قریب بیس سال پہلے، جب میری میتو سات آٹھ سال کی تھی تب میں نے ایک لمبی کویتا لکھی۔ اس کا شیرشک تھا ''الٹی سلٹی میتو''۔ اُس کویتا میں میں نے اپنی بیٹی کے دو الگ الگ روپ دکھائے تھے۔ ایک سُلٹا اور ایک الٹا۔ ایک روپ میں میتو ایک دم نیک، کہنا ماننے والی، سب کچھ ''اچھی بچی'' کے جیسے کرنے والی۔ دوسرے روپ میں میتو ہے شیطان، ناراض، غصہ اور سب کچھ الٹا پلٹا کرنے والی۔ دونوں روپوں میں میتو مجھے اچھی لگی۔ اس کے دونوں روپوں کو میں نے اپنایا۔ دونوں کا مزہ لیا۔ اگر بچّے شیطان نہ ہوں، من موجی نہ ہوں، اگر وہ الٹا پلٹا نہ کریں تو کیا انھیں ہم بچّے کہہ سکتے ہیں؟ بچپن کا مطلب ہی ہوتا ہے الٹا سلٹا ہونا۔

یہ لمبی کویتا ایک چھوٹی خوبصورت سی کتاب کے روپ میں آئی۔ خاص طور سے لڑکیوں کو بہت اچھی لگی۔ اس کتاب کو لکھنے کے بعد میں سوچنے لگی کیا صرف بچّے ہی الٹے سلٹے ہوتے ہیں! کیا ماں باپ یا بزرگ ہمیشہ سلٹے، اچھے، نیک ہوتے ہیں؟ کیا ماں باپ گڑبڑ نہیں کرتے؟ شیطانی نہیں کرتے؟ کیا مائیں بھی ''الٹی''، شیطان ہوتی ہیں؟ یا ہو سکتی ہیں؟

الٹی سلٹی امّاں

उल्टी-सुल्टी अम्मा

کملا بھسین

कमला भसीन

مصنّف: کملا بھسین
تصویریں و ڈیزائن: پریا کورین

پہلا ایڈیشن: 2008

جاگوری
بی-114، شوالِک، مالویہ نگر، نئی دہلی- 110017
فون: 26691219، 26691220
فیکس: 26691221
ہیلپ لائن: 26692700
ئی میل: jagori@jagori.org
ویب سائٹ: www.jagori.org

लेखनः कमला भसीन
चित्र व डिज़ाइनः प्रिया कुरिअन

पहला संस्करणः 2008
द्वितीय संस्करणः 2013

जागोरी
बी–114, शिवालिक,
मालवीय नगर,
नई दिल्ली–110017
फोनः 26691219, 26691220
फ़ैक्सः 26691221
हेल्पलाइनः 26692700
ई–मेलः jagori@jagori.org
वेबसाइटः www.jagori.org

मुद्रण : सिगनेट जी प्रेस
फ़ोनः 26815094

الٹی سلٹی امّاں
उल्टी-सुल्टी अम्मा
کملا بھسین
कमला भसीन